SHUKRACHARYA®™
Indian Vedic Astrology Solutions

Shukracharya Astrological Research Center

Under the Supervision of Vedic Research and Educational Foundation (Regd.)

पाठ्यक्रम

Shukracharya (Institute Main Branch), F-265, Laxmi Nagar, Delhi 110092 India
Website: www.shukracharya.com | Email : academy@shukracharya.com

Team & Senior Faculties

Dr R. B. Dhawan

Principal, Director, Author, Editor, Senior Astrology Faculty, Celebrity Astrologer and Vastu Expert
Delhi, India

Pradeep Dhawan

V. Principal, Controller of Examination, Author, Sub-Editor, Senior Calculative Astrology Faculty, Numerology Consultant
Delhi, India

Ram Pravesh Rai Karmyogi

Governer, Author, Senior Astrology Faculty, Astrological Consultant
Gorakhpur, UP, India

Tarun Sharma

Chapter Chairman, MD AM Naturopathy, Yoga, Astrological Consultant
Yavatmal, Maharashtra, India

Dinesh Mahajan

Pyramid Vastu Faculty, Astrological Consultant
Ludhiana, Punjab, India

Madhav Tivatne

Chapter Chairman, MD AM Naturopathy & Yoga, Astrological Consultant
Mumbai, Maharashtra, India

Sandeep Kapoor

Senior Lal Kitab Faculty, Astrological Consultant
Delhi, India

Vinit Pandey

Chapter Chairman, Astrological Consultant
Sahibabad, UP, India

Advisory Board

Ajay porwal

Nikhilesh Jain

Introduction

Shukracharya is a Reputed Brand since 2000. R B Dhawan being Principal is an well experienced Astrologer in this field; Has been researching, teaching and consulting since 1989.

Shukracharya Academy has established itself in the fields of ancient Indian Vedic Sciences and modern Methods by achieving excellence in Extensive Research and continuous Developmental Correspondence course.

Our Online programs are designed in such a manner so as to impart complete knowledge of these subjects in a simple and understandable language to the learner. The course are designed in a very easy to understand manner so that someone with just a bit of interest can become knowledgable by studying via correspondence at comfort of their home. The structure and content are designed by panel of eminent educationalist and keeping in view that we aim to make and train the enrolled student upto such a level that he can easily make the predictions using purely astrological methods.

Shukracharya Academy is on of the first in this field of Astrological and ancient vedic astrological sciences and has conducted a huge variety of courses including but not limited to Vedic Astrology, Lalkitab Astrology, Numerology, Vaastu Shastra, Ank Shastra/Numerology, Hastrekha Shastra/Palmistry, Mantropchar Vigyan, Panchang, Astrological Upaya Methods and much much more. After completion of our course many of our Students have achieved a lot in this field of Professional Astrology, as one becomes an expert in the subject matter of their courses.

Affiliated autonomously and Running under the Supervision of Vedic Research and Educational Foundation (Regd Soc), our course holds its integrity and authenticity with uncomplicated self learning. Shukracharya Academy has a mission to sread the knowledge hidden in Vedas; science and sub Sciences in its sub granthas, so as to make a person be able to predict on any horoscope comfortably or predict via other theories like Palmistry, Vastu Shastra, Reiki, Numerology and Tarot Reading. Many students from different academic and professional backgrounds have completed their studies with us and are achiving new heights as professionals in their respective studied fields. People from as varied background as housewives, students, engineers, advocates, businessman, software developers, architects, doctors, interior designers, professors, teachers, devotee, technocraft, industrialist, etc. have been the students of the college from across the world.

Shukracharya Academy has been established with the objective of imparting knowledge on various disciplines of Energy Science. We are confident that our efforts will prove a major step towards building professional awareness about ancient cultures, traditions, knowledge and implementing these to bring harmony, peace and prosperity for individuals and human society as a whole. Elite professionals and Gurus across the world have offered their approval to our mission and assured their precious advice and guidance to unfold the secrets of the energy science. The academy also aims at providing relief and remedy for anyone and everyone suffering the negative effects of such energies. College thus aims at producing a number of professionals in the field.

ज्योतिष दैवज्ञ

(ज्योतिष फलादेश) भाग -1

अध्याय-1

ज्योतिष शास्त्र का परिचय

ज्योतिष के पिता महर्षि पराशर, ज्योतिष शास्त्र क्या है?, ज्योतिष का आधार कर्म सिद्धांत, ज्योतिष का परिचय, नक्षत्रसूची कौन है?।

अध्याय-2

खगोल, नक्षत्र एवं राशियाँ

वार क्रम और वारक्रम का सिद्धांत, ग्रहों का परिचय भूगोल के मतानुसार, दूर क्षेत्रीय अन्य ग्रह, नक्षत्र एवं राशियाँ, नक्षत्र का भौगोलिक परिचय।

अध्याय-3

27 नक्षत्रों में जन्म का फल

नक्षत्रों का आकृतियाँ, नक्षत्रों के रंग, नक्षत्रों के नाम व स्वामी।

अध्याय-4

राशियों के गुणधर्म और परिचय

राशियों के गुणधर्म, राशियाँ और उनके स्वामी ग्रह, कालपुरुष और राशिया, राशियों के स्वामी तथा उच्च-नीच ग्रह, मूलत्रिकोण, पृष्ठोदय-शीर्षोदय राशियां, राशियों की संज्ञा व लक्षण, राशियों के तत्व तथा चर-स्थिरादि का प्रयोग, राशियों के देश, राशियों का फलादेश में प्रयोग, राशियाँ और उनका स्वरूप।

अध्याय-5

ग्रह एवं उपग्रह

ग्रहों के गुण, रंग, दिशायें, मंत्रिमण्डल, ग्रहों का अस्तोदय, ग्रहों की मैत्री, ग्रहों की अन्य विशेषतायें, ग्रहों की दिशादि, बालादि, जग्रतादि अवस्था, ग्रहों के स्थान, ऋतु, स्वाद, ग्रहों की इन्द्रीयाँ, रत्न, धातु, वस्त्र, वृक्ष, ग्रहों की दृष्टियाँ, कारक एवं कारकत्व, ग्रहों के आपसी सम्बंध रोगादि तत्व, नवग्रहों से विचारणीय विषय, पापग्रह राहु, केतु एवं शनि, अप्रकाश ग्रह एवं फल।

अध्याय-6

कुंडली के 12 भाव परिचय और फल

कुण्डली के 12 भाव, भावों की संज्ञा (फलादेश)।

अध्याय-7

द्वादश लग्न में जन्म का फल।

मेषादि 12 लग्नों के जातक की आकृति, प्रकृति और स्वभाव।

अध्याय-8

वैदिक ज्योतिष फलादेश के महत्वपूर्ण सूत्र

देश, काल और परिस्थिति, महादशा एवं अंतरदशा, भाव, भावेश और कारक, ग्रहों के आपसी सम्बन्ध, ग्रहों की अवस्था और दृष्टियां, कुण्डली के केंद्र स्थान, कुण्डली के त्रिकोण स्थान और त्रिकोणेश, कुण्डली के त्रिषडाय और त्रिषडायेश, योग कारक, अकारक एवं बाधक ग्रह, दूसरे-बारहवे का स्वामी, अष्टम भाव व अष्टमेश, केन्द्राधिपत्य दोष, राहु एवं केतु का फल, बलवान दशमेश एवं नवमेश का विशेष फल, जैमिनीय मतानुसार आयु अनुमान, दशा फल विचार, फलादेश में नवांश का विशेष महत्व।

अध्याय-9

कुण्डली के प्रमुख योग

कालसर्प योग, कालसर्प योग के प्रकार, कालसर्प योग के लक्षण, पंच महापुरुष योग, रुचक योग, भद्रक योग, हंस योग, मालव्य योग, शश योग, विपरीत राजयोग, अन्य महत्वपूर्ण योग।

ज्योतिष दैवज्ञ आचार्य

(ज्योतिष फलादेश) भाग -2

अध्याय-1

कुण्डली के विशेष तथ्य

कुण्डली के कुछ विचारणीय तत्व, योग कारकों का संश्लेषण और अमरत्व योग।

अध्याय-2

तृतीय भाव भाई-बहनों का विचार

जन्म कुण्डली और भाई-बहन, जन्म कुण्डली में भातृहीन योग, बड़े भाई का बड़प्पन-योग, तृतीय, एकादश और पंचम भाव।

अध्याय-3

शिक्षा का विचार

शिक्षा का विचार कैसे करें?, संगीत और ज्योतिष, शुक्र तथा कवित्वशक्ति।

अध्याय-4

आजीविका का विचार

अजीविका विचार, लग्न तथा आजीविका, आजीविका के विभिन्न योग।

अध्याय-5

विवाह एवं विवाह सुख का विचार

विवाह में जन्म कुण्डली मिलान का महत्व, विवाह और मेलापक, वर-कन्या का कुण्डली मिलान, मेलापक में मंगल, गुरु एवं सूर्य पर विचार, मांगलिक विचार, मंगलदोष प्रभावी मांगलिक जन्मपत्रिका, वैवाहिक सुख का विचार, विवाह किस दिशा में?, विवाह कब होगा?, स्त्री जातक एक सर्वेक्षण, प्रेम एवं परिणय सम्बन्ध।

अध्याय-6

संतान सुख का विचार

संतान विचार, सन्तति योग का विवेचन, जन्म कुंडली में संतान प्रतिबन्धक योग।

अध्याय-7

आयु का विचार

जन्म, स्थिति और मृत्यु का ग्रहों से सम्बंध, ज्योतिष में आयुविचार, अष्टमेष, लग्न से 22वें द्रेष्काण के अनुसार मृत्युकारी रोग, आकस्मिक दुर्घटना के ग्रहयोग।

अध्याय-8

फलादेश की विभिन्न पद्धतियां

कृष्णमूर्ति पद्धति, रमल विज्ञान, अंक और रमल, रमल वर्णन।

अध्याय-9

ग्रहों का विभिन्न भावों में गोचर फलादेश

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि एवं राहु-केतु कर गोचर फल, गोचर में वक्री ग्रहों का प्रभाव।

अध्याय-10

अष्टकवर्ग फलादेश

अष्टकवर्ग फल, सूर्य अष्टकवर्ग फल, चन्द्रमा अष्टकवर्ग फल, मंगल अष्टकवर्ग फल, बुध अष्टकवर्ग फल, बृहस्पति अष्टकवर्ग फल, शुक्र अष्टकवर्ग फल, शनि अष्टकवर्ग फल।

ज्योतिष शिरोमणी

(ज्योतिष फलादेश) भाग -3

अध्याय-1

स्त्री जातक अध्याय

कैसे होंगे पति के गुण दोष, वैधव्य योग, व्यभिचार योग, जारिणी योग, समलैंगिक योग, विष कन्या, प्रवासी पति योग, मर्दानी प्रवृति योग, धार्मिक/आध्यात्मिक योग, मंगल-स्त्री जातक विशेष, स्त्रियो के लग्न से विशेष विचार, स्त्री जातक विशेष नवमांश विचार, राशि और त्रिंशांश से विचार, विषांगना योग, पति-द्वारा त्यक्त जातिकायें एक अध्ययन।

अध्याय-2

मुहूर्त अध्याय

यात्रा में शुभ शकुन, अशुभ शकुन विचार, योगिनी विचार, चन्द्रघात विचार, नक्षत्रघात विचार, तिथिघात विचार, प्रस्थान का विचार, सर्वार्थसिद्धि योग, जीवपक्ष और मृत-पक्ष, दिशा शूल, पाश का विचार।

विवाह मुहूर्त, बृहस्पति और सूर्य विचार, मास विचार, ज्येष्ठ मास, एक ही वर्ष भाई और बहन का विवाह, कन्या का पुनर्विवाह, विवाह में सूतक, विवाह मण्डप विधान।

वाहन खरीदना, कुआं खोदना, घर निर्माण, ग्रहप्रवेश, मंत्र सिद्ध, वाहन चलाने का, सीमान्त कार्य, गड़ा-धन निकालना, व्यापार आरम्भ, किसी भी वार में करने न करने वाले कार्य।

शकुन-अपशकुन।

निषेध मुहूर्त का परिहार।

चौल (मुण्डन) मुहूर्त, अक्षरारम्भ मुहूर्त, विद्यारम्भ मुहूर्त, उपनयन मुहूर्त, दीक्षा (मंत्र) ग्रहण मुहूर्त, वधू प्रवेश मुहूर्त, द्विरागमन मुहूर्त, नवीन वधू के लिये रसोई बनाने का मुहूर्त, हल प्रवहण बीजोप्ति मुहूर्त, स्त्रियों के प्रथम रजोदर्शन में श्रेष्ठ मास पक्ष तिथि इत्यादि, गर्भाधान मुहूर्त, ऋतुमती स्नान का मुहूर्त, जातकर्म मुहूर्त, पुंसवन मुहूर्त, सूतीस्नान मुहूर्त, नामकरण मुहूर्त।

अध्याय-3

प्रश्न शास्त्र अध्याय

प्रश्न विचार-1, प्रश्न विचार-2, प्रश्न ज्योतिष-3, पत्नी कब तक लौटकर आयेगी?, प्रश्न से जन्म का विचार, प्रश्न कुण्डली और विवाह, यात्रा सम्बंधी प्रश्न।

अध्याय-4

वर्षफल (ताजक) शास्त्र

ताजिक शास्त्र के प्रवर्तक, वर्षेश व्याख्या, मास की कुण्डली का निर्माण और उसका फल, मास-कुण्डली देखेने के नियम, वर्ष फल में विवाह के योग, वर्ष फल में स्थानान्तर या पद प्राप्ति योग।

अध्याय-5

ग्रहों की अवस्था और फल

सूर्य की अवस्था फल, चन्द्रमा की अवस्था फल, मंगल की अवस्था फल, बुध की अवस्था फल, गुरु की अवस्था फल, शुक्र की अवस्था फल, शनि की अवस्था फल, राहु की अवस्था फल, केतु की अवस्था फल।

अध्याय-6

अष्टकवर्ग फल

भिन्न-भिन्न अष्टकवर्गों की रेखा के अनुसार सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि अष्टक वर्ग फल, सभी ग्रहों से अष्टकवर्ग अनुसार गोचर फल।

ज्योतिष चाणक्य

(ज्योतिष गणित एवं भूगोल) भाग -4

अध्याय-1

ज्योतिषीय शब्दावली, भूगोल एवं कालगणना

पाश्चात्य खगोल-विज्ञान एवं भारतीय खगोलशास्त्र में मुख्य अंतर, सम्पात बिन्दु, विषुवअयन, चल एवं अचल भचक्र, अयनांश, सायन और निरायन प्रणालियां, निकटतम अयनांश का निश्चय, लग्न अथवा उदीयमान राशि, दशम भाव अथवा एम. सी., लग्न सारिणी, भाव तालिका, एफिमेरीज, खगोलीय क्षेत्र अथवा अंतरिक्ष क्षेत्र, खगोलीय ध्रुव, खगोलीय विषुवत् वृत, क्रांतिवृत (रवि मार्ग), भचक्र, भोगांश (स्फुट), विक्षेप, क्रांति, विषुवांश (ध्रुव), राशिमान, राशि चक्र, भारतीय वैदिक कालगणना, सप्ताह के दिनों का नामकरण, वारों का क्रम कैसे बना, सप्ताह, पक्ष और मास, महीनों का नामकरण, तिथि-वृद्धि एवं तिथि-क्षय, ज्योतिषीय काल परिमाण, युग प्रमाण, मन्वन्तर, मनुओं के नाम, दिन, मास एवं वर्षज्ञान, 60 संवत्सरों के नाम तथा क्रम, मासों में क्षय-वृद्धि-क्रम, दिनमान- रात्रिमान, 'होरा' काल।

अध्याय-2

पंचांग गणना एवं ज्ञान

पंचांग के पांच अंग:- तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण, चन्द्र-सूर्य के अंतर से तिथियाँ, वारक्रम का सिद्धांत, नक्षत्रों के स्वामी, देवता तथा ग्रह, नक्षत्र, नक्षत्र चरण एवं नामाक्षर, नक्षत्र, नक्षत्र स्वामी तथा योग, शुक्ल एवं कृष्ण पक्ष के करण।

अध्याय-3

कुण्डली-निर्माण

कुण्डली-निर्माण के आवश्यक अंग, इष्ट काल बनाना, इष्ट बनाने की विधियां, सूर्योदय और सूर्यास्त, लग्न स्पष्ट करना, बारहवां भाव स्पष्ट करना, जन्म समय का शोधन, ग्रह स्पष्ट करना, विदेश में जन्मे जातक के लिये ग्रह स्पष्ट विधि, लग्न कुण्डली, भाव संधि कुण्डली तथा षोडश वर्ग बनाना, भाव संधि (भाव चलित) कुण्डली, षोडष वर्ग कुण्डलियां।

अध्याय-4

दशा अंतरदशा साधन

विंशोतरी दशा, अष्टोतरी दशा, शताब्दिका दशा, चर्तुशीत्याद्दिका दशा, द्वसप्तति दशा, षष्टि दशा, षटत्रिंश दशा, योगिनी दशा, विंशोतरी महादशा की गणना, अंतर दशा की गणना, प्रति अंतर दशा, योगिनी महादशा साधन।

अध्याय-5

ग्रह मैत्री पंचधा मैत्री एवं उपग्रह साधन

नैसर्गिक (स्वाभाविक) मित्र-शत्रु, तात्कालिक मैत्री, पंचधा मैत्री, उपग्रह:- गुलिक, धूम, व्यतिपात, परिवेश, इंद्रचाप, ध्वज साधन।

अध्याय-6

सर्वाष्टकवर्ग साधन

सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु,, शुक्र, शनि, लग्न अष्टकवर्ग।

लाल किताब आचार्य

अध्याय-1

लाल-किताब परिचय

लाल किताब के उपाय, व्याकरण भाग, दृष्टि की शक्ति और प्रभाव, सोया हुआ घर, सोया हुआ ग्रह, नाबालिग टेवा, जन्म दिन और जन्म समय का ग्रह, प्रत्येक ग्रह का दिन और समय, मसनुई तथा एक ग्रह के दो अंश, ग्रहों की कुर्बानी या बलिदान के बकरे, आयु पर ग्रहों का आम प्रभाव, ग्रहों के रिश्तेदार, ग्रहों से संबंधित वस्तुएँ, ग्रहों का राशि व घर से संबंध, ग्रहों की मित्रता-शत्रुता, लाल किताब के वर्जित-अवर्जित नियम, रिहायशी मकान से संबंधित वर्जित-अवर्जित नियम।

अध्याय-2

बारह घरों की व्याख्या

घर तथा स्थिर ग्रहों की परिभाषा, बारह घरों में ग्रहों का विशेष वर्णन, बारह घरों में ग्रहों के विस्तृत फल की भूमिका, बारह भावों में बृहस्पति का फल, बारह भावों में सूर्य का फल, बारह घरों में चंद्र का फल, बारह घरों में शुक्र का फल, बारह घरों में मंगल का फल, बारह घरों में बुध का फल, बारह घरों में शनि का फल, बारह घरों में राहु का फल, बारह घरों में केतु का फल।

अध्याय-3

पंचायत या पाँच से ज्यादा ग्रहों का फल

ग्रह और बीमारियों का संबंध, ग्रह बीमारी का संबंध, बीमारियों के कुछ उसूल।

अध्याय-4

वर्षफल बनाने की विधी

लाल किताब के अनुसार वर्ष फल का बनाना, वर्ष की कुंडली का निर्माण, विश्लेषण तथा व्याख्या, लाल किताब के अनुसार वर्ष कुण्डली का निर्माण वैदिक वर्ष कुंडली से कैसे भिन्न है। लाल किताब से बनी वर्ष कुंडली में उसका फल, मास-कुण्डली देखेने के नियम, वर्ष फल में विवाह के योग, वर्ष फल में विशेष या पद प्राप्ति और उन्नति योग।

लाल किताब शिरोमणी

अध्याय-1

सूर्य ग्रह और अन्य ग्रह

सूर्य की खानावार वस्तुएँ, मसनूई (बनावटी) सूर्य शुक्र-बुध, सूर्य का अपने दोस्त ग्रहों से संबंध, 12 घरो में सूर्य की हालत, मंदे प्रभाव का उपाय, शत्रु के घर से संबंधित वस्तुएं, सूर्य के प्रभाव में मध्य के ग्रह, सूर्य और शुक्र।

अध्याय-2

बृहस्पति एवं अन्य ग्रह

बृहस्पति का प्रभाव, दूसरे ग्रहों को मदद, आम हालत 12 घरों में, शनि से संबंध, केतु से संबंध, बुध से संबंध, दो ग्रहों का फल, बृहस्पति और चंद्र, बृहस्पति और शुक्र, बृहस्पति और मंगल, बृहस्पति और बुध, बृहस्पति और शनि, बृहस्पति और राहु, बृहस्पति और केतु।

अध्याय-3

चंद्र एवं अन्य ग्रह

चंद्र की खानावार वस्तुऐं, चंद्र का दुश्मन ग्रहों से संबंध, पापी ग्रह, खुशी खाना नं. 4, गमी खाना नं. 10 (चंद्र), दो ग्रहों का फल, तीन ग्रहों का फल, चार ग्रहों का फल, पाँच ग्रहों का फल (पंचायत), सभी ग्रह इकट्ठे।

अध्याय-4

शुक्र एवं अन्य ग्रह

शुक्र एवं अन्य ग्रह- इकट्ठे दो ग्रहों का फल, इकट्ठे तीन ग्रहों का फलादेश, इकट्ठे चार ग्रहों का फलादेश, इकट्ठे पाँच ग्रहों का फलादेश (पंचायत), सभी ग्रह इकट्ठे।

अध्याय-5

मंगल नेक एवं अन्य ग्रह

मंगल नेक, मंगल बद मंगलीक, मंगल शनि संबंध, मंगल राहु संबंध, इकट्ठे दो ग्रहों का फल, तीन ग्रहों का फल, चार ग्रहों का फल, पाँच ग्रहों का फलादेश (पंचायत), सभी ग्रह इकट्ठे।

अध्याय-6

बुध एवं अन्य ग्रह

बुध शक्तिमान, बुध की तासीर, दांत (बुध), नाड़ियाँ (रगें) मर्द व औरत (बुध), नाक का अगला हिस्सा (सिरा) बुध, गर्दन, गुप्तांग (बुध घर का), आवाज , बुध का तीन ग्रहों का फल, पाँच ग्रहों का फल।

अध्याय-7

शनि एवं अन्य ग्रह

शनि (मकान), शनि व केतु, मौत के समय का हाल, शनि की अदालत, दो ग्रहों का फल, शनि और केतु, तीन ग्रहों का फल, पांच ग्रहों का फल।

अध्याय-8

राहु एवं अन्य ग्रह

स्वप्न का परिणाम (राहु), राहु की खानावार वस्तुएं, आम आलत 12 घर, इकट्ठे दो ग्रहों का फल, मंदी हालत।

अध्याय-9

केतु एवं अन्य ग्रह

कान (केतु), पांव पर निशान (केतु का खाना नम्बर 6), पांव की अंगुलियों के नाखुन, रफ्तार (केतु), केतु का घर खाना नम्बर 6, केतु बच्चों से संबंधित।

वास्तु आचार्य

अध्याय-1

मानव जीवन और वास्तुशास्त्र

ज्योतिष और वास्तुशास्त्र, राशियाँ और दिशायें, वास्तुशास्त्र के प्रारम्भिक नियम, वास्तुशास्त्र और ज्योतिष के योग, वास्तु अनुरूप गृह निर्माण, भवन निर्माण के लिये शुभाशुभ समय, वास्तुशास्त्र में दिशायें और उनके देवता, ज्योतिष एवं वास्तु की दृष्टि में दिशा का महत्त्व, कालोनी का चुनाव, निवास के योग्य स्थान।

अध्याय-2

वास्तु अनुरूप भूमि का चयन व भवन निर्माण

भवन निर्माण करने का शुभ मुहूर्त, भवन निर्माण हेतु भूखण्ड का आकार, वास्तुशास्त्र के सूत्र, भूमि की परीक्षा, वास्तु पुरुष की स्थिति, भवन निर्माण करने का शुभ मुहूर्त, वास्तु पुरुष की स्थिति, वास्तु पुरुष का मुख ज्ञान, भूमि की परीक्षा, भूमि की शुद्धि करना, भूमि की सतह, भवन आरम्भ और वास्तु पूजा, वास्तुपुरुष तथा उसके मर्म-स्थान।

अध्याय-3

वास्तु अनुरूप भवन

नींव का महत्त्व एवं मर्मस्थल, विभिन्न प्रकार के भूखण्ड, गृहनिर्माण सम्बन्धी आवश्यक बातें, घर का आकार, घर के आकार में परिवर्तन, घर के समीपस्थ शुभाशुभ वस्तुयें, घर का मुख्य द्वार, भवन योजना व निर्माण सम्बंधी दिशा-निर्देश, द्वार-वेध, स्तम्भ, दीवार की चिनाई, घर के आन्तरिक कक्ष, भोजन कक्ष, खिडकियां, बालकनी, रसोईघर, बैठक कक्ष, स्नानघर का स्थान, शौचाल्य का स्थान, सैप्टी टेंक, पानी की टंकी, पूजाकक्ष स्थल, सेवक कक्ष, जल का स्थान (बोरिंग), जलाश्य का स्थान, जलप्रवाह करने का स्थान, सोपान तथा सीढ़ियां, अन्न भंडार, कबाडघर, कोषागार का स्थान, तलघर का स्थान, आंगन, बालकनी, वास्तु के पांच प्रमुख सिद्धांत, कक्षों का रंग, भवन की ऊँचाई, दीवार पर चित्र, भवन में वृक्ष, गृहप्रवेश।

अध्याय-4

व्यावसायिक वास्तु

व्यवसाय और दिशायें, व्यावसायिक वास्तुनिर्देश, कार्यालय में कक्ष का निर्धारण, दुकान/ऑफिस में बैठने के स्थान, निर्देश, व्यापार वास्तु अन्य विचार, फैक्ट्री निर्माण, व्यापारिक केंद्र का निर्माण, होटल, व्यवसाय स्थल का निर्माण, मुख्य प्रवेश द्वार, ऑफिस, वर्कशाप, जल स्त्रोत, स्टोर व अन्य, दुकान या कार्यालय हेतु वास्तु निर्देश।

अध्याय-5

वास्तुदोष निवारण सलाह एवं उपाय

वास्तुदोष-निवारण के उपाय, राशि के अनुसार मुख्य द्वार, वास्तुदोष के स्टीक निवारण, दुकान के लिये वास्तु उपाय, गृह के आंतरिक कक्ष, वास्तु उपाय के महत्वपूर्ण निर्देश, वास्तुशास्त्र और मानसिक तनाव।

वास्तु शिरोमणी

अध्याय-1

वास्तु अनुसार भवन पर ग्रहों का प्रभाव

वास्तु अनुसार भवन पर सूर्य का प्रभाव, वास्तु अनुसार भवन पर चन्द्र का प्रभाव, वास्तु अनुसार भवन पर मंगल का प्रभाव, वास्तु अनुसार भवन पर बुध का प्रभाव, वास्तु अनुसार भवन पर गुरु का प्रभाव, वास्तु अनुसार भवन पर शुक्र का प्रभाव, वास्तु अनुसार भवन पर शनि का प्रभाव, वास्तु अनुसार भवन पर राहु का प्रभाव, वास्तु अनुसार भवन पर केतु का प्रभाव।

अध्याय-2

घर बनाने के लिये जरूरी निर्देश

घर बनाने के लिये कैसी भूमि चुने?, भूमि का वास्तु परीक्षण एवं शुद्धिकरण, भवन निमार्ण ज्योतिष और वास्तु, मन्दिर और वास्तु, पूजाकक्ष में क्या करें, क्या ना करें?, वास्तु सम्मत फ्लैट, पत्थर से बने भवन, घर में वास्तु शास्त्र अनुसार वस्तुओं को रखना।

अध्याय-3

दाम्पत्य जीवन में वास्तु की भूमिका

शादी में रुकावट वास्तुदोष, अविवाहितों के लिये वास्तु।

अध्याय-4

वास्तु विज्ञान के महत्वपूर्ण बिंदु

होटल, रेस्टोरेंट और वास्तु, कान्फ्रेंस हाल और वास्तु, वास्तु अनुसार सीढ़ियाँ और बेसमेन्ट, वास्तु अनुसार बोरिंग एवं पानी की टंकी, वास्तु विज्ञान के महत्वपूर्ण बिंदु, ताजमहल की प्रसिद्धि का रहस्य वास्तुनुकूलता, जड़ ऊर्जा (कबाड़), घर के कबाड़ से जानिये घर की स्थिति।

अध्याय-5

धनहानि के कारण

धनहानि का कारण वास्तुदोष भी, शौचालय का महा-वास्तुदोष, वास्तुदोष ऐसे भी देखें, फैक्टरी में वास्तुदोष, वास्तुदोष घर की नीलामी का कारण, जघन्य अपराध का कारण वास्तुदोष भी, भवन निर्माण की दुर्घटनायें और वास्तुदोष, वास्तुदोष व्यापार में बाधक, वास्तुदोष और निवारण, वास्तुदोष निवारण से शुभता, लाल किताब और घर का वास्तु, वास्तु के सामान्य नियम लाल किताब के अनुसार, घर बनाने से पहले जानें शनि का हाल 'लाल किताब' मकान-मूहूर्त का विश्लेषण।

हस्तरेखा आचार्य

अध्याय-1

हस्तरेखा देखने के नियम

7 प्रकार के हाथ, शरीर अंगों के सात भेद, हाथ में ग्रह स्थान (पर्वत)।

अध्याय-2

हाथ की प्रमुख रेखायें व चिन्ह

हाथ के प्रमुख चिन्ह, हाथ की बनावट और भेद, समकोण हाथ, चमसाकार हाथ, दार्शनिक हाथ, शिल्पी, कलाकार हाथ, निकृष्ट हाथ, आदर्शवादी या विषम हाथ, मिश्रित हाथ।

अध्याय-3

अंगूठा, अंगुलियाँ, नाखून, पर्व और चिन्ह

हाथ की अंगुलियाँ और उसके लक्षण, नाखून, शंख, चक्र, शुक्ति आदि का विचार।

अध्याय-4

सूर्य ग्रह का पर्वत, रेखायें चिन्ह तथा अंगुलि

सूर्य ग्रह का पर्वत, रेखायें चिन्ह तथा अंगुलि, सूर्य प्रधान व्यक्ति का स्वरूप, गुण, स्वभाव आकृति और शुभाशुभ, स्त्री के सूर्य क्षेत्र का विचार, सूर्यांगुलि और अन्य अंगुलियों का परस्पर झुकाव, सूर्य-रेखा, सूर्य रेखा।

अध्याय-5

चंद्र ग्रह का पर्वत, रेखायें तथा चिन्ह

चंद्र ग्रह का पर्वत, रेखायें तथा चिन्ह, चन्द्रक्षेत्र का निर्णय, पुरुष के चन्द्रक्षेत्र का विशेष फल, स्त्री के चन्द्रक्षेत्र का विशेष फल, चन्द्रक्षेत्र की उच्चता।

अध्याय-6

मंगल ग्रह का पर्वत, रेखायें तथा चिन्ह

मंगल क्षेत्रीय व्यक्ति की आकृति, स्वास्थ्य और स्वभाव, ग्रहक्षेत्रों पर मंगल चिन्ह का फल, भाई बहन की रेखाओं का विचार, सेनापति योग।

अध्याय-7

बुध ग्रह का पर्वत, रेखायें तथा चिन्ह

बुध क्षेत्रीय व्यक्ति का स्वभाव, बुध क्षेत्र की उच्चता, अनुच्चता एवं अत्युच्चता के फल, बुधक्षेत्र के अन्य ग्रह क्षेत्रों पर झुकाव, रोग विचार, बुधांगुलि बुधरेखा का फलादेश।

अध्याय-8

गुरु ग्रह का पर्वत, रेखायें तथा चिन्ह

गुरु ग्रह का पर्वत, रेखायें तथा चिन्ह, गुरुक्षेत्र के अनिष्ट फल और उनका परिहार, स्त्री के गुरुक्षेत्र का विषेष विचार।

अध्याय-9

शुक्र ग्रह का पर्वत, रेखायें चिन्ह तथा अंगुलि विवेचन

शुक्र ग्रह का पर्वत, रेखायें चिन्ह तथा अंगुलि, शुक्र क्षेत्रीय व्यक्ति की आकृति और स्वभाव, शुक्रक्षेत्रीय चिन्हों का विचार, शुक्र चिन्हित ग्रह क्षेत्रों के फल।

अध्याय-10

शनि क्षेत्र, मध्यमा अंगुलि, शनिरेखा और चिन्ह, मित्ररेखा,

शनि क्षेत्र, मध्यमा अंगुलि, शनिरेखा और चिन्ह, मित्ररेखा, भाग्य और धन रेखा तथा व्यसनादि का विचार। शनिक्षेत्र के शत्रु मित्र ग्रहों का विचार, शनि क्षेत्र का अन्य क्षेत्रों पर झुकाव का फल, शुक्र और शनि मुद्रिका।

अध्याय-11

राहुक्षेत्र (हथेली), राहुरेखा, और केतु क्षेत्र चिन्हों का विचार

राहुक्षेत्र (हथेली), राहुरेखा, और केतु क्षेत्र चिन्हों का विचार, राहु क्षेत्र वाले व्यक्ति का स्वभाव, केतु क्षेत्र का परिचय, मणिबन्ध (केतु क्षेत्र) का शुभाशुभ।

हस्तरेखा शिरोमणी

अध्याय-1

ग्रहों के फलादेश में अशुभचिन्ह

अशुभचिन्ह, फलादेश में शुभाशुभ लक्षण और भेद, ग्रहस्थानों की उच्चता-अनुच्चता आदि तथा उनके अन्य क्षेत्रों की ओर झुकाव, त्रिभुज और चतुकोण का विचार।

अध्याय-2

हस्तरेखाओं के वर्ण स्वरूप और भेद और फल

हस्तरेखाओं के वर्ण स्वरूप और भेद और फल, मस्तक रेखा ज्ञान रेखा, मस्तकरेखा का फलादेश, आयुरेखा, सहायक जीवन रेखा, (मंगलरेखा), अवरोध रेखा, भाग्य रेखा, आरोग्य (स्वास्थ्य) रेखा, हृदयरेखा के 16 भेद और उनके रहस्य।

अध्याय-3

विवाह रेखा विचार (विस्तार पूर्वक)

विवाह से सम्पन्नता-असम्पन्नता, रेखाओं और चिन्हों द्वारा विवाह-भेद।

अध्याय-4

मस्तक रेखा ज्ञानरेखा, (मातृरेखा) का विस्तृत विचार

शासकरेखा और उसका फल, सहायक जीवन रेखा (मंगलरेखा) का फल, अवरोधरेखा और उसका फल।

अध्याय-5

जीवन रेखा का परिचय और विशेष फल

शासकरेखा और उसका फल, सहायक जीवन रेखा (मंगलरेखा) का फल, अवरोधरेखा और उसका फल।

अध्याय-6

आरोग्यरेखा या स्वास्थ्यरेखा का विस्तृत विचार

आरोग्यरेखा या स्वास्थ्यरेखा, स्वास्थ्य रेखा का विशेष फलादेश, स्वास्थ्य रेखा चिन्ह विचार।

अध्याय-7

आयुरेखा या हृदयरेखा का विस्तृत विचार

हृदयरेखा के 16 भेद ओर उनसे अनेक रहस्य, हृदयरेखा का परिचय और फलादेश।

अध्याय-8

भाग्यरेखा, ऊध्वरेखा या इन्दिरारेखा का विस्तृत विचार

भाग्यरेखा, उधर्वरेखा या इन्दिरारेखा का विचार, भाग्यरेखा का महत्व, उद्गमभेद से भाग्यरेखा का फलादेश।

अंकशास्त्र आचार्य

अध्याय-1

अंकशास्त्र परिचय

अंकों की पौराणिक भूमिका, अंक परिचय।

अध्याय-2

मूलांक बनाना तथा फलादेश

मूलांक और आप का स्वभाव, अंक और आप का व्यक्तित्व, भाग्यांक, जन्मांक, नामांक, मूल अंक बनाने की विधि।

अध्याय-3

नाम और अंक ज्योतिष

अंकशास्त्र और आजीविका, नामांक से देखें व्यवसाय।

अध्याय-4

अंको द्वारा वर्षफल

अंक वर्ष-फल, अंकशास्त्र से साप्ताहिक भविष्य कथन, अंकों से दैनिक भविष्य, विभिन्न मूलांक वालों के लिये 2007, अंक और तिथि, 'नौ अंक और जन्म तिथियों में उनका महत्व।

अध्याय-5

होरा शास्त्र

शुभ घण्टे तथा ग्रहादि की प्रभात अवधि, लाटरी का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने की विधि, अंक और पुनर्जन्म, हमारी पवित्र नदी, गंगा और अंक, प्राचीन भारत में गणित का क्रमिक विकास, स्वप्न और अंक ज्योतिष, संख्या-संबंध-समीक्षा, विश्वविख्यात भविष्यवक्ता कीरो और अंक, दैनिक भविष्य कैसे जानें!

अंकशास्त्र शिरोमणी

अध्याय-1

अंकों का मनुष्य की आजीविका पर क्या प्रभाव होगा।

मूल अंकों का मनुष्य के लिए रोगों के मामले में प्रभाव, मूलांक और रोग एवं उपाय, मूलांक से जानना आपके मित्र शत्रु आप के लिए कैसे आपको प्रभावित करते हैं। आपके मित्र, अंक कुंडली, ग्रहों का आपकी समस्त आयु पर क्या होगा प्रभाव, ग्रहों के प्रभावन्तर में अन्य ग्रहों का प्रभाव।

अध्याय-2

जन्म के ग्रह कैसे प्रभावित करते हैं 'अंक और वर्षफल' के द्वारा।

जीवनसाथी, साझेदारी, मित्र से आपके लिय मेलापक विचार, खोया-पाया अथवा चोरी, विदेश यात्रा, स्थानीय यात्रा सम्बंधी प्रश्न विचार, मूक प्रश्न-अंक ज्योतिष, खोई वस्तु जानना, अनेक प्रकार से प्रश्न विचार ऐर प्रश्न विचार कैसे किया जाए इसके सिद्धांत। अंक विधा से प्रश्न विचार, प्रवासी आगमन सम्बंधी प्रश्न, गर्ग पद्धति से प्रश्न विचार, हार-जीत, विजय-पराजय।

अध्याय-3

कार्य की अवधि जानना

किसी भी कार्य की सफलता और अवधि जानना। अंक ज्योतिष-लॉटरी टिकट, रिलायंस इन्फोकोम के न. 1 होने का रहस्य, सुभाषचन्द्र बोस और अंक, अंकों की पौराणिक भूमिका, अंकशास्त्र के सर्वमान्य नियमों के अनुसार ज्योतिष शास्त्र के नियमों से तुलनात्मक विश्लेषण और अंकों की स्थिति तथा ज्योतिष विज्ञान।

उपाय आचार्य

अध्याय-1

मंत्र साधना में आवश्यक दिशा निर्देश

मंत्र साधना में गुरू का क्या महत्व है, पूजा अर्चना करने की अनेक पद्धतियां तथा पूजा करने के विविध उपचार, जप करने से पहले जप माला को कैसे चैतन्य किया जाता है, माला और उसके संस्कार, मन्त्र साधना, पूजा के विविध उपचार।

अध्याय-2

ग्रह षांति के उपाय

सूर्यादि ग्रहों के शुभ या भाग्य रत्नों का विचार, ग्रहों के पूजन तथा धारण करने वाले यंत्र, कष्टकारी ग्रहों की शांति के लिए व्रत विधि-विधान, मंत्र के साथ साथ ग्रहों की जड़ी और औषधियों से ग्रह शांति, नवग्रहों के निमित्त दान, क्रूर ग्रहों नवग्रहों के जप करने के लिए जपनीय मन्त्र, नव ग्रह शांति के अन्य उपयोगी उपाय, वेद मंत्रों से कामना सिद्धि, मंत्र साधना के नियम तथा आवश्यक शर्तें।

अध्याय-3

उपासना और ज्योतिष

नवग्रहों के जपनीय मन्त्र, नव ग्रह शांति के उपाय, नवग्रहों के निमित्त दान, रत्नों से कैसे भाग्य बदलता है, वैवाहिक बाधाओं का निवारण, संतान बाधा का निवारण, बालग्रह, (बच्चों के रोग) की शांति, गर्भरक्षक श्रीवासुदेव-सूत्र, दरिद्रता निवारक महालक्ष्मी प्रयोग, दरिद्रता निवारक महालक्ष्मी प्रयोग, प्रबल षत्रु को भी नष्ट करने वाला उपाय, कालसर्प दोष की शांति, साढ़ेसाती से छुटकारा, ग्रहों के प्रभाव से होने वाले रोग, गायत्री मंत्र के सिद्ध प्रयोग।

उपाय शिरोमणी

अध्याय-1

ग्रहों की आराधना कैसे करें?

सूर्य आराधना कैसे करें?, नवग्रहों के अधिदेवता, नवग्रह पीड़ानाशक कवच, नवग्रह दोष निवारक मंत्र, विभिन्न ग्रह दशायें और उनके उपाय, किस तिथि में कौन सा नैवैद्य।

अध्याय-2

उपाय प्रयोगिक खंड

त्रैलोक्य मंगल श्रीसूर्य कवच, सुख समृद्धि प्रदायक आर्थिक स्थिति ठीक करने वाला प्रमुख उपाय है:- श्री सूक्त का पाठ, मारण-मोहन आदि भयंकर अभिचारों से रक्षा करने वाला श्रीनारायण कवच, अकाल मृत्यु शमन हेतु त्रयम्बक मंत्र का प्रभावशाली प्रयोग, बजरंग बाण का अमोघ प्रयोग, अनेक कष्टों का निवारण करने वाला चमत्कारी श्री हनुमत कवच, श्री पंचमुखी हनुमान कवच, ब्रह्मास्त्र महाविद्या, बगलामुखी, प्रेतपीड़ा निवारण के उपाय, रत्नों के प्रयोग से ज्योतिषीय उपाय, तंत्र प्रयोग पर भारी, इंद्राक्षी प्रयोग।

अध्याय-3

उपाय प्रयोगिक खंड विशेष

वृष्टि आवाहन एवं अतिवर्षा स्तम्भन के लिए शास्त्रीय उपाय, ग्रहपीड़ा निवारक उपाय, ग्रहों के दोष की शांति हेतु औषधीय स्नान की विधि व्यवस्था, नेत्र रोग का हरण करने वाला नेत्रोपनिषद, पूर्वजन्म के पापों से रोगों की उत्पत्ती कैसे होती है, विभिन्न पदार्थों के बने शिवलिंग, तुलसी रामायण के कामना सिद्ध मंत्र, एकादशी उपवास का महत्व, विद्या प्राप्ति हेतु नील सरस्वती उपासना, नजरदोष की पहचान व उपाय, हर प्रकार के सुख-वैभव के लिये सूर्य के द्वादश रूप की अर्चना, दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के दुर्लभ उपाय, रोगों का पूर्वाभास व उपाय।

Fee Structure

ज्योतिष

Correspondence		Regular/Online	
Duration	Fee	Duration	Fee
ज्योतिष दैवज्ञ	3 Months (1 Class) 5100/-	3 Months (12 Classes)	9000/-
ज्योतिष दैवज्ञ आचार्य	3 Months (1 Class) 6000/-	3 Months (12 Classes)	12000/-
ज्योतिष शिरोमणी	3 Months (1 Class) 6000/-	3 Months (12 Classes)	12000/-
ज्योतिष चाण्क्य	3 Months (1 Class) 6000/-	3 Months (12 Classes)	12000/-
Research Programme	- -	1 Year	24000/-

लाल किताब

Correspondence		Regular/Online	
Duration	Fee	Duration	Fee
लाल किताब आचार्य	3 Months (1 Class) 5100/-	3 Months (12 Classes)	9000/-
लाल किताब शिरोमणी	3 Months (1 Class) 6000/-	3 Months (12 Classes)	12000/-
Research Programme	- -	1 Year	24000/-

वास्तु

Correspondence		Regular/Online	
Duration	Fee	Duration	Fee
वास्तु आचार्य	3 Months (1 Class) 5100/-	3 Months (12 Classes)	9000/-
वास्तु शिरोमणी	3 Months (1 Class) 6000/-	3 Months (12 Classes)	12000/-
Research Programme	- -	1 Year	24000/-

Fee Structure

हस्तरेखा

Correspondence		Regular/Online	
Duration	Fee	Duration	Fee
हस्तरेखा आचार्य	3 Months (1 Class) 5100/-	3 Months (12 Classes)	9000/-
हस्तरेखा शिरोमणी	3 Months (1 Class) 6000/-	3 Months (12 Classes)	12000/-
Research Programme	- -	1 Year	24000/-

अंकशास्त्र

Correspondence		Regular/Online	
Duration	Fee	Duration	Fee
अंकशास्त्र आचार्य	3 Months (1 Class) 5100/-	3 Months (12 Classes)	9000/-
अंकशास्त्र शिरोमणी	3 Months (1 Class) 6000/-	3 Months (12 Classes)	12000/-
Research Programme	- -	1 Year	24000/-

उपाय

Correspondence		Regular/Online	
Duration	Fee	Duration	Fee
उपाय आचार्य	3 Months (1 Class) 5100/-	3 Months (12 Classes)	9000/-
उपाय शिरोमणी	3 Months (1 Class) 6000/-	3 Months (12 Classes)	12000/-
Research Programme	- -	1 Year	24000/-

Contact Us academy@shukracharya.com +91-9155669922